अनिरुद्धाचार्या जी से माँस भक्षण पर प्रश्न और उनका अतार्किक उत्तर

रिसर्च एवं प्रस्तुति : अब्दुल अज़ीम

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

आचार्य जी के प्रवचनों की सभा में जब भी कोई माँस भक्षण से संबंधित प्रश्न करता है तो आचार्य जी सभी को एक ही उत्तर देते हैं, जो अत्यंत ही हास्यास्पद, बेतुका और अतार्किक होता है। आचार्य जी अपना दार्शनिक विचार प्रस्तुत करते हुए कुछ इस तरह उत्तर देते हैं :-

"माँस खाने वाले जितने जानवर होते हैं जैसे कुत्ता, बिल्ली, चीता, शेर सब जीभ से चाट चाट कर पानी पीते हैं, आपने कुत्ते को पानी पीते देखा होगा ! लेकिन आप कैसे पानी पीते हैं ? होंठो से पीते हैं, मुँह से पीते हैं, गाय कैसे पानी पीती है, बकरी कैसे पानी पीती है, मुँह से पीती है। मतलब शाकाहारी जानवर और मांसाहारी जानवर दोनों ईश्वर ने बनाए हैं। गाय को आप माँस परोसिए नहीं खाएगी, बकरी को माँस परोसिए नहीं खाएगी, जब जानवर, जानवर हो कर अपने धर्म में अडिग है तो हम इंसान क्यों अपना धर्म छोड़ रहे हैं।"

निम्न में प्रस्तुत लिंकस में आचार्य जी के उत्तर पाठक सुन सकते हैं।

https://youtube.com/shorts/-jUP6XOL0UM?si=fc-Nb2_Se5qSiOHC

https://youtube.com/shorts/sC3nlLXGQRo?si=EOeC_NnTZmz0-JCf

ऐसा उत्तर देकर आचार्य जी को लगता होगा कि उन्होने अद्भुत उत्तर दिया है परंतु उन्हें यह ज्ञान ही नहीं है कि इस संसार में बहुत से जानवर ऐसे हैं जो है तो शाकाहारी किंतु पानी वह भी जीभ से चाट चाट कर पीतें हैं, इसके उदाहरण निम्न के लिंकस में देखे जा सकते हैं।

कंगारू

https://youtube.com/shorts/CSdOn3qUiBw?si=6Hp_YRxbAXjrth1a

जिराफ

https://youtube.com/shorts/KWdjoqj-dm8?si=95Ncoc1bTnNecorC

यह दोनों ऐसे जानवर हैं जो शाकाहारी होने के बावजूद पानी जीभ से चाट कर पीते हैं। तो साबित हुआ कि आचार्य जी का उत्तर हास्यासपद, बेतुका और अतार्किक है। इसके अतिरिक्त भी आचार्य जी के ऐसे ही बहुत से बेतुके और हास्यासपद साइंटिफिक उत्तर सोशल मीडिया पर देखे जा सकते हैं।

यदि देखा जाए तो मनुष्य में भी अपनी जीभ से पानी पीने की क्षमता है बल्कि कुछ चीज़ें तो ज़ुबान से चाट कर खाने वाली होती हैं जैसे आइसक्रीम, आचार आदि।

माँस भक्षण का संक्षिप्त दार्शनिक प्रमाण

आचार्य जी कहते हैं कि गाय बकरा वगैरह को आप मांस परोसिए वह नहीं खाएंगे।

मोटे तौर पर इसका उत्तर हर बुद्धिमान व्यक्ति समझ सकता है कि गाय, बकरा वगैरा माँस इसलिए नहीं खाते क्योंकि उनके दांतों में माँस चबाने वाले नुकीले दाँत नहीं है तथा उनके पाचन तंत्र में माँस हजम करने की क्षमता भी नहीं है। लेकिन मनुष्य के संदर्भ में माँस का खाना आम बात है क्योंकि मनुष्यों के दाँतों में ईश्वर ने माँस चबाने की और इसको हजम करने की क्षमता रखी है जो इस बात को प्रमाणित करता है कि मनुष्य सर्वाहारी है।

इसके अतिरिक्त शायद आचार्य जी को अपने ही धर्म ग्रंथो का ज्ञान नहीं है क्योंकि सनातन धर्म ग्रंथो में भी मांस भक्षण के प्रमाण स्पष्ट रूप से विद्यमान है।

हिंदू धर्म ग्रंथो में मांस भक्षण का प्रमाण

नात्ता दुष्यत्यदन्नाद्यान्प्राणिनोऽहन्यहन्यपि ।

धात्रैव सृष्टा ह्याद्याश्च प्राणिनात्तार एव च ।। (मनुस्मृति, ५: ३०)

अर्थात : प्रतिदिन भक्ष्य जीवों को खाने वाला भी भक्षक दोषी नहीं होता है, क्योंकि सृष्टा ने ही भक्ष्य तथा भक्षक दोनों को बनाया है ।

बंधु सखा सँग लेहिं बोलाई। बन मृगया नित खेलहिं जाई।।

पावन मृग मारहिं जियँ जानी। दिन प्रति नृपहि देखावहिं आनी।।

अर्थात : श्रीरामचन्द्रजी भाइयों और इष्ट मित्रों को बुलाकर साथ ले लेते हैं और नित्य वनमें जाकर शिकार खेलते हैं । मन में पवित्र समझकर मृगों को मारते हैं और प्रतिदिन लाकर राजा (दशरथजी) को दिखलाते हैं ॥ १॥

जे मृग राम बान के मारे । ते तनु तजि सुरलोक सिधारे ।।

अनुज सखा सँग भोजन करहीं । मातु पिता अग्या अनुसरहीं।।

(रामचरितमानस, दोहा २०४, चौपाई :१-२)

अर्थात : जो मृग श्रीरामजीके बाणसे मारे जाते थे, वे शरीर छोड़कर देवलोकको चले जाते थे। श्रीरामचन्द्रजी अपने छोटे भाइयों और सखाओंके साथ भोजन करते हैं और माता-पिताकी आज्ञाका पालन करते हैं ॥ २ ॥

तां तदा दर्शयित्वा तु मैथिली गिरिनिम्नगाम् ।

निषसाद गिरिप्रस्थे सीतां मांसेन छन्दयन् ।।

इदं मध्यमिदं स्वादु निष्टप्तमिद मग्निना।

एवमास्ते स धर्मात्मा सीतया सह राघवः ।।

(वाल्मीकि रामायण, अयोध्या काण्ड, ९६, १ व २)

अर्थात : इस प्रकार सीता जी को (नदी के) दर्शन कराकर उस समय श्री रामचन्द्र जी उनके पास बैठ गए और तपस्वी जनों के उपभोग में आने योग्य मांस से उनका इस प्रकार लालन करने लगे, "इधर देखो प्रिये, यह कितना मुलायम है, स्वादिष्ट है और इसको आग पर अच्छी तरह सेका गया है।"

इसके अतिरिक्त श्री रामचन्द्र जी के मृगादि के शिकार तथा माँस खाने के वृतान्त के लिए **वाल्मीकि रामायण में देखें - अयोध्या काण्ड, ५२-१०२; ५६-२२ से २८; और अरण्य काण्ड ४७-२३ व २४** आदि।

पाराशर, पतंजलि और याज्ञवल्क्य के माँस भक्षण संबंधी उद्धरण तो ऐसे हैं जो माँस भक्षण को विस्तार से एवं पूर्णतः प्रमाणित करते हैं। मैं निवेदन करूंगा कि शाकाहारी और गौ-प्रेमियों को ये धार्मिक उद्धरण अवश्य पढ़ने चाहिए।

धन्यवाद !

भवान् प्रति सद्बोधनं मात्र मम् दायित्वमस्ति, भवतः च सम्यक् विचारोपरान्त सन्मार्गे आचरन् इति। यथेच्छसि तथाकुरु।

****

दिनांक

27/11/2024

- **संपर्क सूत्र : email : islamdharmkisattyata@yahoo.com**

- **https://www.youtube.com/channel/UCeyCLxXCrIUETXDW11J1f5Q**

ISAM DHARM KI SATTYATA